1. यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे ।
2. जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि ।
3. विद्या ददाति विनयम्,
विनयम् ददाति पात्रताम्,
पात्रताम् धन,
धनात् धर्म,
धर्म्यम् सुख ।
4. चिंता दीनदयाल को,
मो मन सदा आनन्द,
जायो सो प्रीतपालसी,
रामदास गोविन्द ।
5. चिंता ताको कीजिए,
जो अनहोनी होय,
अनहोनी होती नहीं,
होनी होय सो होय ।
6. करने में सावधान,
होने में प्रसन्न ।
7. संसार भगवान का प्रतिबिम्ब है ।
8. अधिक सामर्थ्य है, इच्छा बिलकुल नहीं – शाहंशाह
अधिक सामर्थ्य है इच्छा थोड़ी – धनवान
जितनी सामर्थ्य उतनी इच्छा – निर्धन
सामर्थ्य से अधिक जरूरतें – दरिद्र
9. मनुष्य जन्म हीरा है, हम कौड़ियों के बदले
उसे गंवा देते हैं ।

10. हमें संसार का स्वामी बनना है ना कि गुलाम
11. उपयोग में योग सिद्ध होता है,
उपभोग से रोग लगता है।
12. भगवान को मानो पर उससे उत्तम है भगवान
की मानो।
13. जहाँ हमारी सामर्थ्य समाप्त होती है वहाँ भगवान
की कृपा आरम्भ होती है।
14. जब "मैं" था तो हरि नहीं,
जब हरि है तो "मैं" नाही,
प्रेम गली अति साँकरी,
जामें दो न समाहीं।
15. लोभ पाप का बाप है।
16. भगवान को प्रसन्न करो,
संसार का हित करो
17. तेरे घट में राम, तू काहे को भटके रे।
18. चिंता नहीं करो
चिंतन करो
19. राम नाम को अंक है,
सब साधन है शून्य,
अंक गए कछु हाथ नहीं,
अंक लगे दस गून।
20. अपनी नज़र नहीं नज़रिया बदलो।
21. संसार को भगवान की नज़र से देखो।
22. जिसकी अपनी ज़रूरत नहीं वो ही दूसरे की
ज़रूरत पूरी कर सकता है।

23. चाह गई चिन्ता गई, मनुवा बेपरवाह,
जिसको कछु ना चाहिये, सो ही शहँशाह ।

24. भगवान इच्छा से मिलते है,
संसार प्रयत्न से मिलता है।

25. धर्म हमेशा जोड़ता है,
अधर्म हमेशा तोड़ता है।

26. देने वाला देत है, देत रहत दिन रैन,
लोग भरम मोपे करें, तासे नीचे नैन।

27. कर्मस्थल बन जाए मंदिर,
घर को आश्रम बन जाने दो,
हर साँस बोध के साथ चले,
हर बात भजन बन जाने दो।

28. जो इच्छा या द्वेष नहीं रखता है वो ही नित्य संन्यासी है।

29* मनुष्य जीवन में चाहने और माँगने का स्थान नहीं है।

30. अंदर की सफाई तो स्वयं करनी पड़ेगी।
बाहर का काम तो कोई दूसरा भी कर देगा।

31. अज्ञान का नाश परमात्मा के साक्षात्कार से मिटेगा।

32. आशा ही परमं दुःखम्,
नैराश्यम् परमं सुखम्।

33. अपना उद्धार स्वयं करो। अपनी आत्मा को अधोगति में न डालो।

34. श्याम की चर्चा हमारा प्राण है,
श्याम की चर्चा सुरवों की खान है,
श्याम की चर्चा हमारी शान है,
श्याम की चर्चा हमारा मान है,
श्याम की चर्चा सुनाता जो हमें,
श्याम की चर्चा बताता जो हमें,
श्याम की पीरपाटी सिखाता जो हमें,
श्याम के प्रेम में लगाता जो हमें,
है कृतज्ञ सदैव हम उसके परम

35. किसी का अहित करोगे तो अपने साथ शत्रुवत् व्यवहार करोगे।

36. जो भक्त है वो संसार के मोहिनी रूप में न फँस कर उसमें छिपे मोहन को पहचानते हैं।

37. जब हम स्वयं प्रकाशमय हो जाएंगे तो अंधकार रूपी दुःख आएंगे ही नहीं।

38. संसार सुन्दर है क्योंकि उसमें भगवान हैं।

39. हमारी अध्यात्मिकता की परख
1, भूतकाल का शोक नहीं
2, भविष्य की चिन्ता नहीं,
3, वर्तमान में प्रसन्न रहेंगे, तो हम अभय हो जाएंगे तथा आत्मविश्वास आएगा।

40, भगवत् भक्ति, ज्ञान और वैराग्य का तेल लगा कर संसार से आसानी से तर जाओगे।

41. भगवान का चिंतन सारी चिंताओं को खा जाता है।

५२. आशा एक राम जी से, दूजी आशा छोड़ दे,
नाता एक राम जी से, दूजा नाता तोड़ दो।

५३. शास्त्र को जानो, पढ़ो, समझो और फिर उसे आत्मसात् करो।

५४. समर्पण में अपनी पसंदगी, अच्छा-बुरा सब खत्म हो जाता है।

५५. खुदी को याद रखा,
खुदा को भूल गया,
हाय! क्या भूलना था,
क्या भूल गया।

५६. राग द्वेष नहीं पालने वाला व्यक्ति त्यागी, मेधावी, बुद्धिमान है। उसके सारे संशय नष्ट हो जाते हैं।

५७. मर्म को न जान कर किये हुए अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है। ज्ञान से विशेष ध्यान है। ध्यान से विशेष कर्मफल का त्याग। कर्मफल के त्याग से परम् शान्ति की प्राप्ति होती है।

५८. संसार को साधन बना कर भगवान पाना है भगवान को साधन बना कर सांसारिकता नहीं बढ़ानी है।

५९. मनुष्य वह है जिसकी अपनी कोई आवश्यकता नहीं, पर वह दूसरों की आवश्यकता है।

50. उनकी मर्ज़ी पे तो चल रहा है,
उनकी मर्ज़ी ही तो चल रही है,
ये ज़िन्दगी फ़कत,
उन्हीं के इशारों पे तो चल रही है।

51. भगवत्-प्राप्ति के मार्ग पर :—
पहले माहात्म्य (महत्त्व बुद्धि) ज्ञान आता है,
फिर रुचि आती है,
फिर प्रेम आता है,
फिर वे हमारे जीवन का अंग बन जाते हैं।

52. काम ना छोड़ें, कामना छोड़ें।
वास ना छोड़ें वासना छोड़ें।

53. मनःस्थिति बदलें, परिस्थिति नहीं।

54. सुख की आशा और फल की इच्छा त्याग देने से भय, चिंता, व्यग्रता नहीं होते।

55. कर्म अच्छे-बुरे नहीं होते, हमारे राग-द्वेष उन्हें अच्छा-बुरा बनाते हैं।

56. ममत्व → अपनत्व — समत्व - भगवान से जुड़ना

57. उदार हुए बिना संसार प्रसन्न नहीं होता।
प्रेमी हुए बिना भगवान प्रसन्न नहीं होते।
उदार और प्रेमी से जगत और जगत्पति दोनों प्रसन्न होते हैं।

58. दोष और कामनावाला मनुष्य निर्भय और निश्चिन्त नहीं रह सकता। निर्भय और निश्चिन्त होने पर ही ज्ञान का प्रादुर्भाव होता है।